अथर्ववेदीय गोपथब्राह्मण—एक परिचय

अथर्ववेदकी नौ शाखाओंमें आज केवल दो ही शाखाएँ उपलब्ध होती हैं—शौनक शाखा तथा पैप्पलाद शाखा। इनमें शौनक शाखा ही आजकल पूर्णरूपसे उपलब्ध तथा प्रचलित है। पैप्पलाद शाखाकी संहिता पूर्णरूपसे उपलब्ध नहीं है। पातञ्जल-महाभाष्य (१। १। १) तथा गोपथब्राह्मण (१। १। २९)-के आधारपर यह ब्राह्मण पैप्पलाद शाखासे सम्बद्ध है, परंतु सम्प्रति उपलब्ध अथर्ववेदका एकमात्र ब्राह्मण 'गोपथ' ही है।

नामकरण—

'गोपथ' के नामकरणके विषयमें विविध मत उपलब्ध होते हैं, परंतु इस लेखमें अधिक विश्वसनीय एकमात्र मत प्रस्तुत किया जाता है।

ऐतरेय, कौषीतकि, तैत्तिरीय आदि ब्राह्मणग्रन्थोंकी प्रसिद्धि प्रवचनकर्ता आचार्योंके नामपर है। अतः गोपथब्राह्मणकी प्रसिद्धि भी इसके प्रवचनकर्ता ऋषि 'गोपथ' के आधारपर हुई, क्योंकि अथर्ववेद शौनकसंहिता (काण्ड १९ के ४७—५० तक चार सूक्तों)-के द्रष्टा ऋषि गोपथ हैं। इस आधारपर गोपथब्राह्मणके प्रवचनकर्ता गोपथ-ऋषिके होनेकी सम्भावना अधिक है।

स्वरूप—

यह ब्राह्मण 'पूर्व-गोपथ' और 'उत्तर-गोपथ'—इन दो भागोंमें विभक्त है। पूर्वभागमें पाँच तथा उत्तरभागमें छः प्रपाठक—इस प्रकार कुल ग्यारह प्रपाठक हैं। प्रपाठकोंका विभाजन कण्डिकाओंमें हुआ है। पूर्वभागके पाँच प्रपाठकोंमें १३५ और उत्तरभागके छः प्रपाठकोंमें १२३ कण्डिकाएँ हैं। इस प्रकार इसमें कुल ग्यारह प्रपाठक और २५८ कण्डिकाएँ हैं।

अथर्ववेद-परिशिष्टके ४९वें परिशिष्ट 'चरणव्यूह' का कथन है कि किसी समयमें गोपथब्राह्मण १०० प्रपाठकोंमें विभक्त था।

प्रतिपाद्य विषय—

पूर्वभागके प्रथम प्रपाठकमें सृष्टि-प्रक्रियाका निरूपण है। तदनुसार स्वयम्भू-ब्रह्माका तप, जलकी सृष्टि, जलमें रेतःस्खलन, शान्त जलके समुद्रसे भृगु, अथर्वा, आथर्वण-ऋषि तथा अथर्ववेद, ॐकार, लोक और त्रयीका आविर्भाव वर्णित है। अशान्त जलसे वरुण, मृत्यु, अङ्गिरा, अङ्गिरस ऋषि, अङ्गिरस वेद, पाँच व्याहृति तथा यज्ञकी उत्पत्ति बतलायी गयी है। तदनन्तर पुष्करमें ब्रह्मके द्वारा ब्रह्माकी सृष्टि, ॐकारका महत्त्व, ॐकार-जपका फल, ॐकारके विषयमें ३६ प्रश्न तथा उनके उत्तर, गायत्री-मन्त्रकी विशद व्याख्या एवं आचमनविधि आदि विषयोंका वर्णन है।

द्वितीय प्रपाठकमें ब्रह्मचारीके महत्त्व तथा उनके कर्तव्योंका निरूपण करते हुए कहा गया है कि ब्रह्मचारीको ऐन्द्रिक रागों तथा आकर्षणोंसे बचना चाहिये। इसके साथ ही स्त्रीसम्पर्क, दूसरोंको कष्ट पहुँचाने तथा ऊँचे आसनपर बैठनेका निषेध आदि विविध आचार-दर्शनके विषय इसमें प्रतिपादित हैं। तदनन्तर यज्ञमें होता प्रभृति चारों ऋत्विजोंकी भूमिका भी इसमें वर्णित है।

तृतीयसे लेकर पञ्चम प्रपाठकतक यज्ञसम्बन्धी विभिन्न विषयोंका वर्णन है। जैसे—ब्रह्माके महत्त्व, अथर्ववेदवित्को ब्रह्मा बनाना चाहिये, व्रतभङ्ग होनेपर प्रायश्चित्त करना चाहिये, दर्शपूर्णमास तथा अग्निहोत्रकी रहस्यमयी व्याख्या, ऋत्विजोंकी दीक्षाका विशेष वर्णन, अग्निष्टोम, सवनीय पशु, इष्टियाँ, गवामयन, अश्वमेध, पुरुषमेध आदि विभिन्न यज्ञोंका विवरण।

उत्तरभागमें भी विभिन्न यज्ञों तथा तत्सम्बद्ध आख्यायिकाओंका उल्लेख है। जैसे—प्रथम प्रपाठकमें कण्डिका १—१२ तक दर्शपूर्णमास, १३—१६ तक काम्येष्टियाँ, १७—२६ तक आग्रयण, अग्निचयन और चातुर्मास्योंका वर्णन है। द्वितीय प्रपाठकके प्रथम कण्डिकामें काम्येष्टि, २ से ४ तक तानूनप्त्रेष्टि, ५—६ तक प्रवर्ग्येष्टि, ७—१२ तक यज्ञशरीरके भेद, सोमस्कन्द-प्रायश्चित्त, १३—१५ तक आग्नीध्रविभाग, प्रवृत्ताहुतिओं, प्रस्थितग्रहों तथा १६—२३ तक दर्शपूर्णमासका निरूपण है। तृतीय प्रपाठकके प्रथमसे षष्ठ कण्डिकातक वषट्कार-अनुवषट्कार, ७—११ तक ऋतुग्रहादि, १२—१९ तक एकाह प्रातः सवन, २०—२३ एकाह माध्यन्दिनसवनका उल्लेख है। चतुर्थ प्रपाठकमें तृतीयसवन तथा षोडशी यागका विधान है। पञ्चमसे षष्ठ प्रपाठकोंमें अतिरात्र, सौत्रामणि, वाजपेय, आप्तोर्याम, अहीनयाग और सत्रयागका निरूपण है।

इस प्रकार अन्य ब्राह्मणग्रन्थोंके समान गोपथब्राह्मणमें भी मुख्यरूपसे यज्ञकर्मोंका प्रतिपादन हुआ है। इस ब्राह्मणकी जो अलग विशेषताएँ हैं, उनको भी संक्षिप्त रूपमें यहाँ प्रस्तुत किया जाता है—

गोपथब्राह्मणकी विशेषताएँ—

१-पूर्वब्राह्मणके प्रारम्भमें ही सृष्टि-प्रक्रियाका निरूपण है (१।१।१—१५)।

२-ॐकारसे जगत्की सृष्टि (१।१।१६—३०)। यद्यपि पूर्ववर्णित सृष्टि-प्रक्रियासे यह भिन्न प्रतीत होता है, तथापि इसका अलग महत्त्व है।

३-इसमें ॐकारके विषयमें जितनी व्याख्या उपलब्ध होती है, उतनी व्याख्या अन्यत्र नहीं है। प्रत्येक वेदोंमें ॐकारोच्चारणका भेद (१।१।२५), प्रत्येक वेदमन्त्रके उच्चारणसे पूर्व ॐकारका उच्चारण (१।१।२८) करना चाहिये।

४-किसी अनुष्ठानके आरम्भ करनेके पहले तीन बार आचमन करना चाहिये (इसके लिये विशिष्ट मन्त्रका संकेत है—१।१।३९)।

५-ब्राह्मणको गाना और नाचना नहीं चाहिये, 'आग्लागृध' नहीं कहलाना चाहिये **(य एष ब्राह्मणो गायनो वा नर्तनो वा भवति तमाग्लागृध इत्याचक्षते, तस्माद् ब्राह्मणो नैव गायेन्नानृत्येन्माग्लागृधः स्यात्** १।२।२१)।

६-गायत्री-मन्त्रकी प्राचीनतम व्याख्या इसमें मिलती है।

७-व्याकरण महाभाष्यमें उपलब्ध अव्यय-कारिकाका प्रथम पाठ इसी ब्राह्मणमें दिखायी पड़ता है— **'सदृशं त्रिषु लिङ्गेषु सर्वासु च विभक्तिषु। वचनेषु च सर्वेषु यन्न व्येति तदव्ययम्'** (१।१।२६) इसके अतिरिक्त धातु, प्रातिपदिक, विभक्ति, विकार, विकारी, स्थानानुप्रदान आदि व्याकरण-सम्बन्धी शब्दोंका भी उल्लेख है (१।१।२५—२७)।

८-आथर्वणश्रुति (अ० ११।५)-का अवलम्बन करके ब्रह्मचारीके विभिन्न कृत्योंका उल्लेख है (१।२।१—९)। वेदाध्ययनके लिये ४८ वर्षतक ब्रह्मचारी-व्रतमें रहनेके विधान (१।२।५)-के साथ प्रत्येक वेदके लिये बारह-बारह वर्षोंकी अवधि निर्धारित की गयी है।

निर्वचन-प्रक्रिया—

अन्य ब्राह्मणोंकी तरह गोपथब्राह्मणमें भी शब्दोंकी निर्वचन-प्रक्रिया अत्यन्त रोचक प्रतीत होती है। जैसे—

१-यज्ञार्थक 'मख' शब्दकी व्युत्पत्ति— **'छिद्रं खमित्युक्तं तस्य मेति प्रतिषेधः, मा यज्ञं छिद्रं करिष्यतीति।'** (गोपथब्रा० २।२।५)। 'ख' का अर्थ छिद्र है, इसका 'मा' शब्दके द्वारा निषेध किया गया है। इससे यह बात स्पष्ट होती है कि यज्ञमें कोई अशुद्धि या भूल नहीं होनी चाहिये।

२-'रथ' शब्दकी व्युत्पत्ति— **'तं वा एतं रसं सन्तं रथ इत्याचक्षते'** (१।२।२१) रसपूर्ण अर्थात् आनन्दमय होनेसे इसका नाम 'रथ' हो गया।

३-'दीक्षित' शब्दकी व्युत्पत्ति— **'श्रेष्ठां धियं क्षियतीति…… दीक्षितः'** (१।३।१९) श्रेष्ठ बुद्धिका निवास होनेके कारण 'दीक्षित' हो गया।

४-'स्वेद' शब्दकी व्युत्पत्ति— **'सुवेदं सन्तं स्वेद इत्याचक्षते'** (१।१।१) वेदके अच्छे जानकार होनेसे ही पसीनेको 'स्वेद' कहा जाता है। इसपर एक आख्यायिका भी है।

५-'कुन्ताप' शब्दकी व्युत्पत्ति— **'कुयं भवति वै नाम कुत्सितं तद्यत्तपति, तस्मात् कुन्तापः'** (२।६।१२)। अथर्ववेदके २०।१२७—१३६ तकके सूक्तोंका नाम 'कुन्तापसूक्त' है। इसीका अर्थ यहाँ दिया गया है। पापकर्मको जलानेवाले सूक्त या मन्त्रका नाम 'कुन्ताप' है।

इसके अतिरिक्त धारण करनेसे 'धरा', जन्म देनेके कारण 'जाया', वरणसे 'वरुण', मधुसे 'मृत्यु', भरण करनेके कारण 'भृगु', अथ+अर्वाक्='अथर्वा', अङ्ग+रस= अङ्गरस या 'अङ्गिरस' आदि विभिन्न प्रसंगोंमें विभिन्न शब्दोंकी निरुक्ति है। इस तरह भाषाशास्त्रीय दृष्टिसे भी गोपथब्राह्मणका अपना पृथक् महत्त्व है।

गोपथब्राह्मणका सम्बन्ध—

वैदिक वाङ्मयमें सामान्यतः संहिता, ब्राह्मण, श्रौतसूत्र, गृह्यसूत्र और धर्मसूत्र ऐसा क्रम उपलब्ध होता है, किंतु आथर्वण वाङ्मयमें ऐसा क्रम न होकर इससे भिन्न क्रम या विपर्यस्त क्रम उपलब्ध होता है। आथर्वणिक वाङ्मयोंके अध्ययनसे यह पता चलता है कि इसका क्रम भिन्न है। अन्य वेदोंके श्रौतसूत्र संहिता या ब्राह्मणग्रन्थोंपर आश्रित हैं और गृह्यसूत्र श्रौतसूत्रोंपर। परंतु अथर्ववेदका वैतानश्रौतसूत्र कौशिकगृह्यसूत्रपर आधारित है और गृह्यसूत्र पूर्णतः संहितापर आश्रित है। इसी प्रकार ब्राह्मण और श्रौतसूत्रके कुछ अंशोंकी तुलना करनेसे ऐसा प्रतीत होता है कि गोपथब्राह्मण भी वैतानश्रौतसूत्रसे सम्बद्ध है।

[श्रीऋषिरामजी रेग्मी, अथर्ववेदाचार्य]